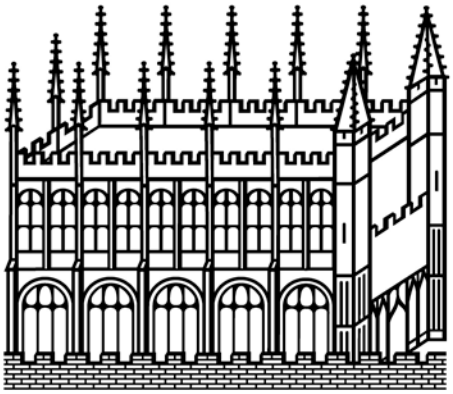

Bodleian Libraries

UNIVERSITY OF OXFORD

This book is part of the collection held by the Bodleian Libraries and scanned by Google, Inc. for the Google Books Library Project.

For more information see:

http://www.bodleian.ox.ac.uk/dbooks

This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 2.0 UK: England & Wales (CC BY-NC-SA 2.0) licence.

Hindi
Uma 1

13.D.23

Indian Institute, Oxford.
The Lucknow Sparks Library.
Presented
by
Munshi Newul Kishore.

Dohāvalī ratnāvalī.

Dohawali Ratnawali

दोहावलीरत्नावली

श्रीमन्महाराज सर्व्वविद्यासागर श्रीरामभक्त
त्रिपाठ्युमापतिरचित
जिसमें
श्रीमन्महामहामहीपकुमारकोटिपरमाजयकार
स्वीयभक्तजनतापदारकसमस्तशुभकारक
श्रीरामचन्द्रजीमहाराजकेबालचरित्र
औरज्ञानोपदेशवर्णितहैं
यही
पूर्व्वोक्त ग्रन्थकार सच्छिष्य परमगुरु भक्तिरत
कायस्थ कुलावतंश गिरिधारीलाल की
आज्ञानुसार
दूसरीबार

स्थानलखनऊ

मुंशी नवलकिशोर के छापेख ने में छापी गई

अक्टूबर सन् १८८२ ई०

भूमिका

प्रकटहो कि यहपुस्तक जिसको श्रीमहाराज महामहोपाध्यायबैकुण्ठबासी अयोध्यानिवासी श्रीरामभक्तिप्रकाशी भक्तजनसभाबिलासीत्रिपाठी श्री उमापतिजी जो कि इस समय में धर्म्मस्थान सम्पूर्ण हिन्दुस्तान में बुधसभा के प्रभाकरथे रची है उन्हीं महाराजके शिष्य कायस्थ कुलभूषण हड़हाग्रामबासी काव्यबिद्याबिलासी लावण्यनिधान परमसुजान श्रीगिरिधारीलाल ने निजगुरु भक्त्युत्सुकता से समस्त श्रीरामभक्तजनोंके उपकारार्थ श्रीयुत मुन्शीनवलकिशोर के यन्त्रालय में छपवाई ॥

श्रीगणेशायनमः ॥

दोहावलीरत्नावली ॥

दोहा ॥

श्रीदशरथसुतजानिये अवतारीअतिचित्र ॥ मित्रमयं कअनेकद्युति श्रुतिबर्णतिसुपवित्र १ ईश्वरतासुदयालुता सुन्दरतातनऔर ॥ कोविदबनवासीऋषी मोहेतेहिशिर मौर २ किनअवतारेशासिये किननगरीकरिमुक्त॥ कोविदश्रीरघुबरबिना किनमहेशभजुयुक्त ३ दोषिहुमित्र नत्यागिये किनअसनियमेकीन ॥ कोबिदअससम्बन्ध को कोपालकलवलीन ४ तातमिताईमानिको गीधक्रिया निजहाथ ॥ श्रुतिपुराणसज्जनकहत कोविदकियरघुनाथ ५ तातेइनतजिआननहिं भजियेयोंनतिहोइ ॥ कोबिदयहसुखभोगियेमरिमुक्तोसबकोइ ६ इनपूजाइनभजनचहि इनधामहिंमोधाम ॥ कोबिदमोदमरिहितरिहि होसकामनिष्काम७धामधरेनामैररे कामहरेकरितोष ॥ कोबिदलखिमनमुदभरे तरेअवश्यनशिदोष ८ सीता सहितपुनीतअति उचितनामजपुराम ॥ एकैतत्वदुरूपभै कोविदयहअभिराम ९ यहसंसारअसारअति तहांयही अतिसार ॥ इनहींकीचर्चासदा अर्चाकोबिदपार १० रमासदाउत्साहइन क्षमादयाऋतबैन ॥ निष्किंचनहू चाहिये हियउछाहनिशिऐन ११ अष्टयामचिंतनइन्हें

रासबिलासबिशेष॥ राजकुमारशिकारप्रिय कोबिदउन पुनिबेष १२ द्विबिधिशिकारकरतललन खलनमृगनजब चाह॥ धर्म्मशर्म्मनरतनदरश कोबिदनितहिउछाह १३ रासबिलासअधिकतहां अधिकाधिकवरदान॥ कोबिदसत्कृतिसबहिको दीनाधिकसनमान १४ तातमातुगुरु कीसदा भक्तिविशेषमहेश॥ मित्तप्रीतिअरुबित्तकी बितर नरहतहमेश १५ हँसिमृदुभाषणसबहिंते प्रथमहिंतब प्रियदान॥ आसनयोग्यअसनउचित कोबिदमोदबिधान १६ ब्राह्मणमात्रहुंनम्रता विद्वज्जनहिंबिशेष॥ गुरुजनढिगलघिमानिरखि कोबिदचकितउमेश १७ धर्म्मविरुद्धकबहुंनहिं नहिंकहुंअनुचितबैन॥ कोबिदबिहरतसर्बदातउनबिबसकहुंमैन १८ ब्रह्मसमयउठिचिन्तना इष्टदेवकुलदेव॥ कोबिदतबबंदीरुद पठहिंअनेकनभेव १९ नरसुरगंधर्ब्बहुकरैं गानतानसहप्रेम॥ कोबिदनरसुरबारबधु नाचहिंनितप्रतिनेम २० गुणि बालकनाचहिंअजब जेहिलखिलाखसिहाहिं॥ कोबिद द्विजबररामबहि अंतरसखीसखाहिं २१ दधिदुर्ब्बाहरदीकलशजलपूरितआदर्श॥ कोबिदमृगशावकशुभगमीनपीनजलपर्श २२ ध्वनिमृदंगअतिअद्भुते नारिगानप्रियतान॥ सुरगुरुप्रतिमालखतहीं उठहिंसुनहिंजयगान२३ बसनसवँारिसवँारिकच भूषणसखिजनवेष॥ आरतिरतिअतिकरहिंहिय कोबिदमोदविशेष २४ बहुत हेममणिवारहीं तनमननिजअतिप्रेम॥ कोबिदलखिलालोललचि लावैंगलतजिनेम २५ बाहेरआइ मिलैंसबै

यथाउचितमृदुबैन ॥ कोबिदबैठिशुभासने सबैसहांसी चैन २६ तबशारीरककरिक्रिया सरयूजलगंडूष ॥ कोबि दशासनसहितहित दतुअनिमंजुपियूष २७ रदरसना शोधनउपर सबतीरथमुखछाल ॥ कोबिदमणिमयगृह निरखि मुखप्रेक्षणसुरझाल २८ तबवहुधनबहुगुणत इलमालिशपरसुस्नान ॥ ईषदुष्मतीरथतिरथ कोबिद षटपरिधान २६ गंगास्तुतिश्रुतिस्मृतिरचित पढ़हिंमु-नीश्वरआप ॥ सुरबरचित्रासनवैठिकोबिदलावैंछाय ३० संध्योपासिउपासिसुर श्रुतिपढ़िपूजनदेव ॥ सबउपचार सहितकथा कोबिदश्रवणसभेव ३१ दानबिधानसहित सबैकरिद्विजपूजिप्रसाद ॥ कोबिदआशिषलहिगही औ षधिपोषसुस्वाद ३२ सुरभीपयलयफलसफल कछुक खाइ मुखशोधि ॥ बीरापायबिचित्ररस कोविदपरिमल बोधि ३३ कचसवाँरिसेवकसुघरि पहिरायेबरबसन॥ज-सनसहितनिशिरोवैहँसिकोबिदबर्णतलसन ३४ सबभाई यहिविधिकरैंहरैंसुरनमनरोज॥ आशिषगहेलहेसमुदचहे जगतमुदमोज ३५ आरजढिगआवहिँसजेसबैसबेरहिं पाव ॥ कोविदपकरहिंनजरिसहमिलहिँलालभलभाव ३६ पुछिकुशलातसुबातकरिजातगहेगुरुभ्रात ॥ कोबिद चतुरंगिनिसहित गुरुपगगहतप्रभात ३७ आशिषसिय आदरपरम पायप्रसादसुवाद ॥ गुर्वीमातप्रपातपग स-हितरतनपरमाद ३८ गहिगोदीमोदीपरम शिरसुंघिमुख चुमिमात॥ आशिषदैआरतिकरी फलखवायकहितात ३६ रसपियायबीरादई ओछीपोछीबदन ॥ मृदुबातैंसुनिमुनि

सहित कोविदभरिगदगदन ४० लहिप्रसादलालनच-
रण पकरेआशिषपाय ॥ कोबिदगयेसुयज्ञजी गेहनेह
अधिकाय ४१ दम्पतिपूजनकरिसबिधि शिरघ्राणादिक
पूर्व ॥ लहिआशिष आरतिप्रभृति सहितप्रमोदअपूर्व ४२
प्रीतिबातकरिपगपकरि गयेतातढिगलाल ॥ कोबिदपग
पकरेसबिधि अंकलियेनृपबाल ४३ मोदभरेआशिषकरे
शिरसूँघेमुखचूमि ॥ तातातकहिबातगहि कोबिदकबि
दुमिदूमि ४४ बसनबिभूषणअसिधनुष हयकुलीननव
पीन ॥ कोबिदसहितप्रसादके सबहिमहीपतिदीन ४५
आयसुलैपगपकरिसब गयेमातसबगेह ॥ पगपकरेआ-
नन्दअतिगोदगहेसहनेह ४६ मुखचूमेआशिषदये गद
गदगिरशिरसूंघि ॥ सुनिबातेंमातेंसबै कोबिदगइमनु
ऊंघि ४७ सुधिसँभारिआदरकरी आरतिमणिमयमात॥
बारिजवाहिरगोदगहि लहीसबहिमुदब्राति ४८ निज
निजरुचिरखवाइफल मूलमिठाइअनूप ॥ अमीसरसरस
प्याइकहिअँचवाईरहुचूप ४९ विरादईसुरगेहगइचरण
नवाईमाथ ॥ सुनिगणपुजवाईप्रसद धोरासबशिशुहाथ
५० ल्याईपुनिनिजगेहशिशु बसनादिकदइचाह ॥ को-
बिदतवपदपकरिसब गयेसबतोषसभाह ५१ सुरउपसुर
नरनाहसब आयेदर्शनलागि ॥ यथाउचितसन्मानसब
सबैसराहेभागि ५२ नाचसांचगतिहोतनित नरउपसुर
परिकेर ॥ गानतानमयमधुरबर तालअनेकनफेर ५३
देशअनेकनबातसुनि सबसनमानेलाल ॥ जयजयसुनि
निजगृहगयेआरतिकरिबरबाल ५४ विराअतरसत्कार

बरकेलिनबेलिअनल्प ॥ करिकरिकरेशरीरकृति पुनिन-
हानश्रुतिजल्प ५५ मध्यान्हिककृतिकरिकरे राज्यभोग
सबयोग॥ कोबिदश्रीगुरुतातअरु भ्रातसखासहलोग५६
सबप्रकारभोजनकिये अँचयसाहताचार ॥ कोबिदकरि
नतिगुरुजनहिंगयेनिजेआगार ५७ आदरलहिआरति
लहीबीरालहियेलादि॥ कोबिदमृदुबातैंलहीं शयनकिये
मुखस्वादि ५८ उठेचतुर्थप्रहरलहर मोदलहेसबकोइ ॥
कोविदकरितनकाकिया पुनिनहायमुखधोइ ५९ कछुमे-
वादिकपाइकरि करिपोसाकसुरशाक ॥ बाहिरनिसरि
सवाँरिलहि जेहिलखिरुकिसुरवाक ६० रंगीलीचतुरं-
गिणी चलिबिशालसँगलाल ॥ चोबदारविरुदावलीपढ़े
बढ़ेकहिआल ६१ सरिसभाइसमसुहृदमुद समुदसेवि
सबलोक ॥ रमनाजायशिकारकरि पलटेसुखबिनरोक
६२ नानाविधिकौतुककरे भरेमोदअसवार ॥ कोविद
लखिसकुचितकहे सुरसरिबाहहजार ६३ आइसवाँरि
बजारमो दारसताजसुलाज ॥ कोविदमणिमुक्तामिलित
डारहिंमहिबिनदाज ६४ कबहुँशिकारबिहारजल कबहुँ
लोकव्यवहार ॥ कोविदइतउतमेलकी कबहुँशुद्धसंचार
६५ खगमृगमनुजमहिषवृषमेषकरीशरदूल ॥ इत्या-
दिकशिशुकलिकुल कबहुंमहामुदमूल ६६ तातमातपग
पकरिबर पायक्रियातनकरि ॥ कोविदकरिसंध्याकरीक-
थासुनीश्रुतिमेरि ६७करिबिआरिबीरालई करिआचमन
सराज ॥ गयेसभानरतनलखी सखीकहीशयकाज ६८
सबबांछितअच्छीतरह पूरणकरिगेगेह ॥ कोबिदलहि

बहिआरती बातैंसुनीसनेह ६९ खेलिअनेकनखेलभलि
मेवाबीरापाय ॥ शयनकियेअलिबलिलिये धनिधनिसुर
सुरिगाय ७० यहिचिंतनचाहीसबहि सबहिंइनहिंगुण
गान ॥ इनहींकोनिजजानियेऔरसबैतृणजान ७१ रसि
कजनहिंसंगतिचही रसिकजनहिँसोंबात ॥ बन्धुरबन्धु
रसिकजनेजावेकोविदतात ७२ श्रीविग्रहदर्शनकरे श्री
विग्रहकेमान ॥ सबउपचारहिंप्रेमसेांकोविदउनहींगान
७३ भेदबुद्धिनहिंराखिये हरिअर्चामेंामित्त ॥ कोविदउ-
त्सवदिननमेा अवशियथानिजवित्त ७४ सत्यदयानित
नेमतेप्रेमप्रेमदहुथान ॥ हरिहरिजनताहूपरे गुरुजनको
बिदमान ७५ अभ्यागतसत्कारनित हरमतिक्षमिअप-
राध ॥ कोविददिनदिनसबबढ़े डढ़ेसकलनिजबाध ७६
द्विजसज्जनपूजनसदा मुदाताहिपुनिचाह ॥ कोबिदया-
मेावसिरहे अवशिजानकीनाह ७७ काहूनाहिंविरोधिये
राँधियउचितबिचारि ॥ कोविदबाचियलोकतेपरलोको
अधिकारि ७८ कामादिकरिपुप्रबलये इनहींतेहठिबैर ॥
कोबिदकरुहरुइनहिंको यातेइतउतखैर ७९ हानिला
भनिन्दानुतीसुखदुखमानअमान॥ कोविदसमरहियेखुशी
गीताकरतबयान ८० ज्ञानभक्तिसुबिरक्तिये पर्मशर्म
कोहेत ॥ अर्थधर्म्मअरुकामको आननिदानहिंचेत ८१
अर्थहेतउद्यमउचितधर्म्महेतश्रुतिकार ॥ कामउचितनिज
कामिनी कोबिदकरहुबिचार ८२ यामांजबविपरीत
तबजानहुंनरकनिवास ॥ कोविदतातेउचितकरुजातेउ
भयसुपास ८३ जगतअसतसतब्रह्महै जीवब्रह्मयहएक ॥

अंतष्करणउपाधिते भेदवेदयहनेक ८४ बिनाबासनासो
नहींशुद्धबुद्धसममानु ॥ तातेतजिसबबासना संबिदगहि
मुदआनु ८५ हेतुरहितअनुरागबर इष्टदेवयहभक्ति ॥
दुहूंलोकसुखचाहनहिं मलसमयेहिबिरक्ति ८६ सम्पति
तीनोलखुवृथा मानसबसनहिंशुद्धि ॥ तातेनाशनबास
नासबहिभयेमनुबुद्धि ८७ मनशोधनकारणवही वा
बिननाहिंअशुद्धि॥कोबिदयहितेबशनहीं बशबिनमनहिं
अबुद्धि ८८ बुद्धिभईक्योंहेतुतौ भोगरोगलाचार ॥ कोबि
दयहबहुधालखो हरिकरुणापुनिसार ८९ सोपुनिबिन
प्रेमानहींकबिशावकको लेख ॥ तातेसबअतिकठिनअब
कोबिदकहतबिशेष ९० तातेमुक्तिनरापुरी सेइयहठकरि
साधु ॥ साधुशर्महोवैअवशि कोबिदमिटुअपराधु ९१
नामधामदुइकामदुख जानेंआमबखान ॥ कोबिदसाम
सदाचहीदामहोइतादान९२ श्रवणमननकीर्तनकिये सं-
बिदहोतविशेष॥कोबिदतापरपाइयेपराभक्तिसुखबेष९३
प्रेमाईषतकालकीपरासदाबिनबाध ॥ कोबिदजोकल्याण
चहुपराभक्तिकोसाध ९४ श्रुतिपुराणसतसंगते महिमा
जानीजात ॥ कोबिदतबसबपरदृढ़ नेहभक्तिउदगात ९५
ताहीतेसंसृतितरण नाहींअपरउपाय ॥ कोबिदज्ञानहि
मुक्तिहै यहांभक्तिदरसाय ९६ मोचनहोवैजाहिते ताको
मुक्तिबखान ॥ सोपुनिहोवैभक्तितेमुक्तिभक्तिकोजान ९७
उहांभक्तिपदनहिंधरी बरीकरीश्रवणादि ॥ कोबिदमुक्ति
करीपरा जानेंयाहिअनादि ९८ श्रीशाण्डिल्यकहीयही
गीतागाईयाहि ॥ कोबिदअवशिमुमुक्षुजन मुक्तिहेतयहि

चाहि ९९ जोहरिकोसुखसर्बदा सोइमुक्तजनजानु ॥ कोबिदवेदबखानहैं इहांभेदनहिंमानु १०० वेदहितेकैव ल्यभल वेदहितेयहउक्ति ॥ कोबिदमोदविशेषइहु सुनें रसिकजनयुक्ति १०१ ब्रह्मसदाआनन्दहै मुक्तभयेपुनि सोय ॥ कोबिदजीवअभावभै कहोशर्म्मकेहिहोय १०२ दुःखनिवृत्तिहिसुखइहां कहौसत्ययहबात ॥ कोबिदसम निर्बाणमो दुखनशिसुखबिलगात १०३ सख्यपराकैव ल्यपदबाच्यजानदैबित्त ॥ ब्रह्मपदैजीवैकहततथाइहांपद मित्त १०४ अर्थएकपदएकहै एकैहैसम्बन्ध ॥ कोबिद तातेजानिये केवलयाहिअबन्ध १०५ मुख्यसख्यरघुना-थकोसाथकारिश्रुतिगाथ॥ तारतभवपाथोधिमलकोबिद मुदगहिहाथ १०६ सख्यगहेसत्यारहे कहेलालहीबात लहेअमृतजीवतमरत चहेनकछुजगजात १०७ यातेपर नहिंवस्तुकछु लोकबेदमोभाइ ॥ कोबिदगहोलहो चहो यानाचहोयोभाइ १०८ सफलबिमलकुलजन्मनहिंसफ लप्रेमबिनलाल ॥ कोबिदतातेचाहिये सदाइनहिं रसख्याल १०९ जीवनधनमनलालहैमतिगतिलालहि लाल ॥ कोविदलालहिलालजपु जयजयलालसवाल ११० धनिइनरसिकजनेसबै धनिइनसुमिरणकाल ॥ धनिइनचर्चाश्रवणधनि कोबिदधनिधनिलाल १११ धनिधनिश्रीदशरथमहिप धनिकौशल्यारानि ॥ कोबि-दधनिसत्यापुरी धनिइनबालकबानि ११२ दोहावलि रत्नावली कविकोबिदकृतजाप ॥ करिहिसोरघुबरप्रिय अवशिहोइहिहवैनिष्पाप ११३ नखनवशशिश्रितशरद

पुससितसितरबितिथिपूर ॥ भैरत्नावलिरेवती जीवसजी वनमूर ११४ रघुबरस्यगुरोःसुहृदोहृदो बिलुलितां ललितांमणिमालिकाम्॥सुहृदयःसदयेहृदयेसदापरिदधा तुनवंबिमलंशिवम् ११५ ॥ इति श्रीमन्महामहामहीप कुमारमारकोटिपरमाजयकारश्रीमद्रामभद्रगुरुमित्रसभा सत्रिपाठ्युपनामोमापतिशर्म्मनिर्म्मितदोहा वलिरत्नवा-ली परिधायकपायिकाभूयात् ॥

दोहावलिरत्नावली श्रीगुरुबिरचितग्रंथ ॥
पराभक्ति को देखियत जामें सूधोपंथ १
गिरिधारी कायस्थकुल बासीहड़हाग्राम ॥
रूपवायोतेहिहेतुकरिबढ्योमोदअभिराम२

इतिदोहावलीरत्नावलीसमाप्ता